राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

चैत्र शुक्ल 8, वि. 2081, युगाब्द 5126, 16 अप्रैल, 2024 वर्ष : 40 अंक: 02

चुनावी महासमर

100 प्रतिशत मतदान

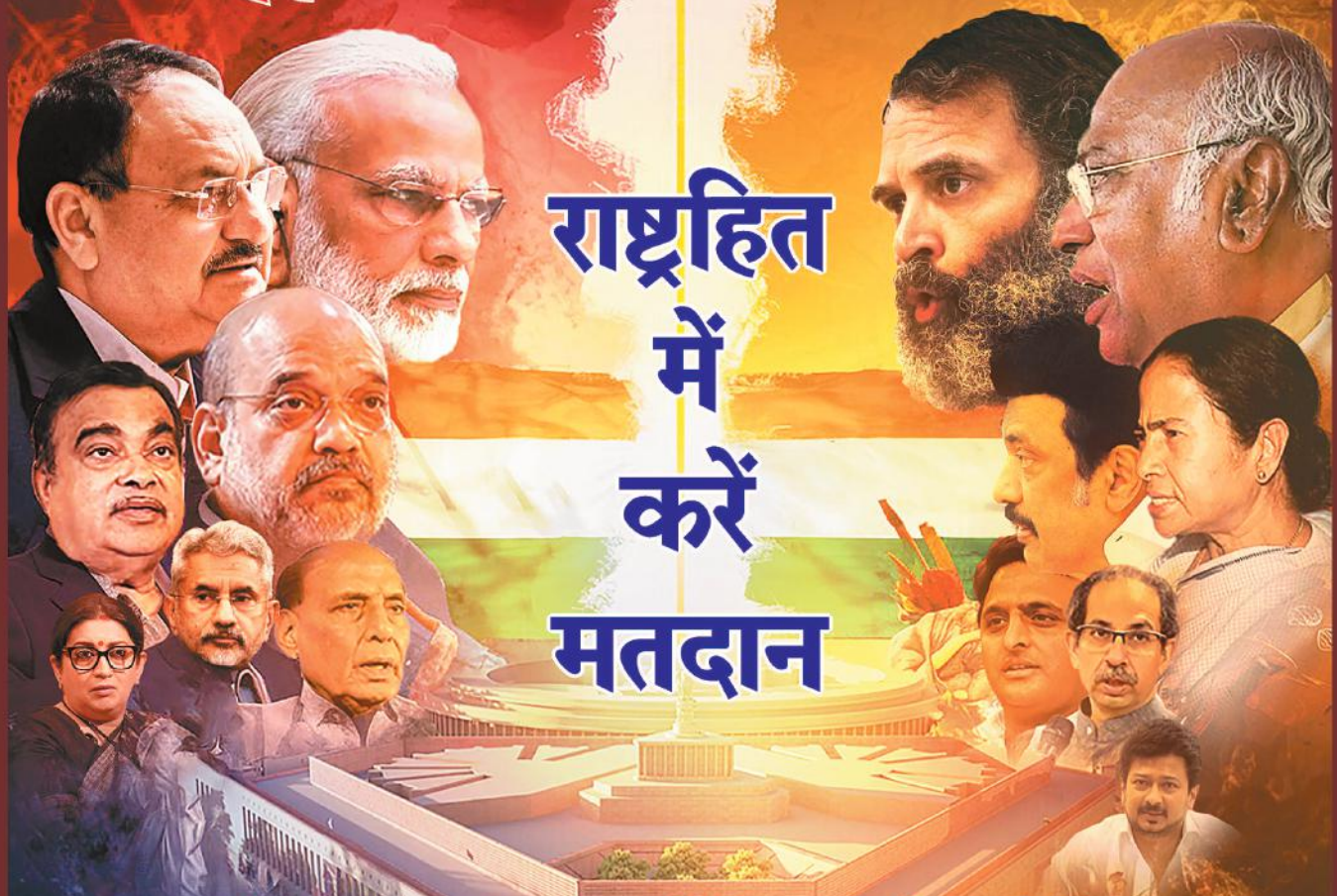

राष्ट्रहित में करें मतदान

खुले आम संस्कृति पर हमले रोज धर्म को गाली है,
राम कृष्ण पर कीच फेंकने की भी कसमें खा ली हैं।
गूंगे रह सब सहन करोगे या प्रतिकार करोगे तुम
केवल एक बटन से सारा अंधियारा छंट सकता है,
वही बटन फिर आज सुदर्शन चक्र अजय बन सकता है।।

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

पूरा देश समर में है...

■ **बलवीर सिंह 'करूण'**

निर्वाचन का बिगुल बज गया, हलचल गांव नगर में है।
साधारण संग्राम नहीं है, पूरा देश समर में है।।

सूरज पर कालिख मलने के, कुछ के घृणित इरादे हैं,
एक बार फिर देश बांटने, निकले कुछ शहजादे हैं।
खुले आम संस्कृति पर हमले, रोज धर्म को गाली है,
राम कृष्ण पर कीच फेंकने, की भी कसमें खा ली हैं।।

गूंगे रह सब सहन करोगे, या प्रतिकार करोगे तुम,
फन कुचलोगे या नागों को, सिर्फ प्रणाम करोगे तुम।
वीर वंश के रणधीरों से, अब इतिहास पूछता है,
दो जन्मों का सावरकर का कारावास पूछता है।।

यों तो सबके चरण चल रहे, भारी भीड़ सफर में है।
साधारण संग्राम नहीं है, पूरा देश समर में है।।

एक तरफ हैं श्रीराम को, फिर से घर लाने वाले,
काश्मीर को काली धारा, से बाहर लाने वाले।
डोनों के आतंकवाद से, छुटकारा देने वाले,
और उधर निर्लज्ज शत्रु का, जयकारा देने वाले।।

कुछ दिन में ही भारत मां का, शीश गगन तक उठा दिया,
जगत गुरु होने का सपना, लगभग सच कर दिखा दिया।
ऐसे कर्मवीर पुत्रों को, शुभ आशीष न दोगे क्या?,
अथवा फिर से लंकेशों के,पग पर शीश धरोगे क्या?

ध्यान रहे अमृत घट फिर से, काली किसी नजर में है।
साधारण संग्राम नहीं है, पूरा देश समर में है।।

खतरा है पूरे भविष्य पर, अंधकार छा जाने का,
खतरा है फिर एक बार, घर के खंडित हो जाने का।
केवल एक बटन से सारा, अंधियारा छंट सकता है,
वही बटन फिर आज सुदर्शन, चक्र अजय बन सकता है।।

शिव का धनुष राम के हाथों, पुनः टूट भी सकता है,
आँख बींधने वाला शर, अर्जुनी छूट भी सकता है।
लंका हो या कुरुक्षेत्र हो, विजय धर्म की होनी है,
केवल थोड़ा सोच समझकर, फसल वोट की बोनी है।।
जीतेंगे तो राम पथी, यह चर्चा घर-घर में है।
साधारण संग्राम नहीं है, पूरा देश समर में है।।

– 45, केशव नगर, अलवर

कुछ युगान्तकारी परिवर्तन

पिछले वर्षों में भारत में कई ऐसे परिवर्तन किए गए हैं जिनकी प्रतिक्षा लंबे समय से की जा रही थी–

1. अंग्रेजों के बनाए कानूनों में परिवर्तन

पुराने अनुपयोगी हो गए 1 हजार 200 पुराने कानूनों को समाप्त किया गया। 'राजद्रोह कानून' जिसके अंतर्गत क्रांतिकारियों को फांसी या अन्य सजा दी जाती थी, उसे रद्द कर दिया गया है।

अपराध तथा दण्ड प्रक्रिया के संबंधित अंग्रेजों के बनाए तीन महत्वपूर्ण कानूनों के स्थान पर भारतीय न्याय सहिता, नागरिक सुरक्षा संहिता तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम बनाए गए हैं।

2. नई शिक्षा नीति

पुरानी शिक्षा पद्धति के स्थान पर 'भारत केंद्रित' नई शिक्षा नीति लागू की जा रही है।

3. शरणार्थियों-घुसपैठियों में अंतर

पड़ोसी देशों में धार्मिक उत्पीड़न के शिकार लोगों को नागरिकता देने की सरल व्यवस्था हेतु सीएए कानून लागू किया गया।

4. बीटिंग रिट्रीट में बदल

भारत का गणतंत्र दिवस समारोह 'बीटिंग रिट्रीट' के साथ समाप्त होता है जो 29 जनवरी को होती है। इसमें अंग्रेजों की बनाई हुई Abide With Me Tune के स्थान पर 'ए मेरे वतन के लोगों' के साथ भारतीय संगीत वाद्य यंत्र शामिल किया गया।

5. राष्ट्रपति भवन स्थित 'मुगल गार्डन' का नामकरण 'अमृत उद्यान' किया गया।

6. भारत की पहचान सनातन-हिंदुत्व के आधार पर बनाने का प्रयत्न

* नये संसद भवन में सेंगोल की स्थापना जो कि न्यायपूर्ण शासन का प्रतीक है।
* नये संसद भवन में हिंदू कला-कृतियों का अंकन।
* विदेशी राष्ट्राध्यक्ष या राजनयिक के आने पर उनको ताजमहल दिखाने के स्थान पर अयोध्या, काशी, अक्षरधाम आदि स्थानों पर ले जाना तथा भगवद्गीता भेंट करना।

7. औपनिवेशिक मानसिकता का प्रतीक बदलना

भारतीय नौसेना के ध्वज से सेंट जार्ज क्रॉस को हटाकर शिवाजी महाराज की शाही मुहर से प्रेरित चिन्ह लगाया।

मतदान हमारा अधिकार है

देश का भाग्य तय करेंगे ये चुनाव-कहीं चूक ना हो जाए

चुनावी संघर्ष के कुरुक्षेत्र में दोनों ओर की 'सेनाएं' आमने-सामने आ डटी हैं। जैसे कुरुक्षेत्र के समर में लगभग पूरा भारत ही दो पक्षों में बंट गया था, कुछ वैसे ही आने वाले चुनाव-समर को दो खेमों में बांटने की कोशिशें हो रही हैं। एक ओर हैं हिन्दुत्व समर्थक, राष्ट्रवादी ताकतें जिनका घोष है- विरासत के साथ विकास, तो दूसरी ओर हैं तथाकथित छद्म वाम-सेक्युलर, परिवारवादी पार्टियां जिनके बहुत से नेता भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे हैं। इस खेमे के बहुत से सिपहसालार अपने समर्थकों के साथ राष्ट्रवादी खेमे में पहुंच रहे हैं। एक भगदड़ सी मची दिखाई दे रही है। अखबारों की मानें तो 4 अप्रैल तक केवल राजस्थान में यह आंकड़ा 8 हजार से ऊपर पहुँच गया है। अवश्य इस भगदड़ में कुछ चेहरे ऐसे भी हैं जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप रहे होंगे। इनसे सावधान रहना होगा।

वर्तमान चुनावी कुरुक्षेत्र का मैदान सम्पूर्ण भारत बना है। फैसला जनता को करना है। जो दस वर्ष पहले सत्ता से बाहर हो गए थे, वे बहुत व्याकुल हो रहे हैं सत्ता में आने के लिए। उन्हें असहनीय पीड़ा हो रही है। उन्हें लगता है कि राष्ट्रवादी धड़ा जीत गया (मतलब वे इस बार भी सत्ता में नहीं आ पाए) तो देश में आग लग जाएगी, देश में लोकतंत्र समाप्त हो जाएगा। जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने जम्मू-कश्मीर के संबंध में कुछ ऐसा ही कहा था कि वहां से धारा 370 हटाई गई तो आग लग जाएगी, खून की नदियां बहेंगी और दो हाथ भी नहीं मिलेंगे तिरंगा उठाने के लिए। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वहां अब विकास की गाथाएं लिखी जा रही हैं। पत्थरबाज गायब हो गए हैं और अलगाववादी नेता जेल की सींखचों में बंद हैं।

देश में कैसी भी हृदय विदारक घटना हो जाए, उसके बारे में बोलने से पहले राजनैतिक दल अपनी तुष्टीकरण की राजनीति पर गौर करते हैं। बंगाल के संदेशखाली में हिंदू अनुसूचित जाति की महिलाओं को दबंग-दरिंदा शाहजहां और उसके गुर्गे जबरन ममता दीदी की पार्टी के कार्यालय में ले जाते थे। उन पीड़ित महिलाओं के आरोप हैं कि रात-रात भर उनके साथ व्यभिचार और दरिंदगी की जाती थी। स्वाधीन भारत की इस शर्मनाक घटना के विरुद्ध क्या सभी राजनैतिक दलों ने आवाज उठाई? चुनाव समर के एक धड़े के दलों ने प.बंगाल के 27 प्रतिशत मुस्लिम मतदाताओं को ध्यान में रख कर चुप्पी साध ली। क्या अब दरिंदों, दुराचारियों और दुष्टों के विरुद्ध आवाज अपना राजनीतिक नफा-नुकसान देख कर उठाई जाएगी? और फिर, कोई दुराचारी एक मजहब विशेष का है तो यह क्यों मान लिया जाता है कि उस मजहब के सभी लोग उस दुराचारी के साथ हैं? तब तो फिर उस मजहब के सभी मानने वाले क्या कटघरे में खड़े नहीं हो जाएंगे?

सब जानते हैं कि पिछले 8-10 वर्षों में चीनी सीमा पर भारत ने सुरक्षा के कितने पुख्ता इंतजाम कर लिए हैं। सीमा पर सड़कें-सुरंगें बनाई गई हैं। सेना को पर्याप्त हथियार दिए गए हैं। भारत न केवल डिफेंस सेक्टर (सुरक्षा क्षेत्र) में आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है वरन् दूसरे देशों को भी सुरक्षा उपकरण निर्यात करने लगा है। भारत ने अब तक विश्व के 84 देशों को अपने रक्षा-उपकरण बेचे हैं। मात्र एक वर्ष (2023-24) में 21 हजार करोड़ से ज्यादा के रक्षा उपकरणों का निर्यात किया गया। अब भारत की अंतरिक्ष संस्था-इसरो केवल भारतीय उपग्रहों को अंतरिक्ष में नहीं भेज रही, दूसरे देशों के उपग्रहों को भी पर्याप्त शुल्क लेकर अंतरिक्ष में भेज रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इसरो अब तक दूसरे देशों के लगभग 500 उपग्रह अंतरिक्ष में भेज चुका है। क्या ये तथ्य गर्व करने योग्य नहीं हैं?

सदियों पुराना घाव था तथाकथित बाबरी ढांचे के नाम पर। लाखों रामभक्तों ने मंदिर के लिए बलिदान दिया। वर्तमान चुनावी समर युद्ध में एक तरफ खड़े हैं वे लोग जिन्होंने राम के अस्तित्व को नकारा, जिन्होंने रामभक्तों पर गोलियां चलाई, जिन्होंने रामकथा-रामचरितमानस के बारे में अपशब्द कहे, जिन्होंने सनातन को समाप्त करने की बात कही। दूसरी ओर हैं वे लोग जिन्होंने राम मंदिर के लिए यात्राएं निकालीं, जिन्होंने राम के लिए अपनी सत्ता को ठोकर मार दी, जिन्होंने राम मंदिर निर्माण का रास्ता सुगम किया। जो अब तक एक दूसरे के विरुद्ध ताल ठोक रहे थे वे अब एक होने का दिखावा कर रहे हैं। भ्रष्टाचार के विरोध में उठे अन्ना आंदोलन के कुछ सिपहसालार कैसे स्वयं भ्रष्टाचार के दलदल में फंसते चले गए, झूठ बोलने के सभी रिकार्ड जिन्होंने ध्वस्त कर दिए, जिन्होंने भ्रष्टाचार में गिरफ्तार होने के बावजूद सत्ता से चिपके रहने का नया प्रतिमान बनाया है- उनको भी जनता देख रही है। राष्ट्रवादियों के विरोध में बने इस गठबंधन के कई दलों ने घोषणा की है कि सत्ता में आने पर जम्मू-कश्मीर में फिर से धारा 370 लगा देंगे तथा सीएए और तीन तलाक पर प्रतिबंध जैसे कानून रद्द कर देंगे।

ये चुनाव देश का भाग्य निर्धारित करेंगे। ये चुनाव 2047 तक भारत को दुनिया का सिरमौर बनाने के सपने को साकार करने के लिए होंगे। पिछले वर्षों में विश्व में भारत का सम्मान बढ़ा है। आस्ट्रेलिया जैसे देश के प्रधानमंत्री भारत के प्रधानमंत्री को 'बॉस' जैसा संबोधन कर रहे हैं। विदेशों में रह रहे भारतवंशी अब सिर उठा कर भारतीय मूल का होने में गर्व महसूस करते हैं। उनके पीछे भारत जो खड़ा है। अब विश्व में कहीं भी भारतीयों पर संकट आता है तो भारत उनका रक्षा कवच बनकर तुरंत सक्रिय हो जाता है, फिर चाहे यूक्रेन से हजारों विद्यार्थियों को सुरक्षित भारत लाने की बात हो या फिर कोरोना महामारी के दौरान लगभग 4 हजार भारतीयों को भारत लाने का कार्य हो। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में ऐसे नौ अभियान किए गए जिन्होंने तिरंगे की शान बढ़ाने के साथ ही भारत के प्रधानमंत्री का विश्व में कद बड़ा किया है।

100 प्रतिशत मतदान के साथ लोकतंत्र के इस पावन पर्व पर हर भारतीय को सक्रिय होना होगा। देश के विकास, सुरक्षा व सम्मान को ध्यान में रखकर हमें मतदान करना होगा।

- रामस्वरूप अग्रवाल

विरासत को संजोता विकास की ओर बढ़ता भारत

स्वावलंबी, सामर्थ्यशाली समृद्ध व सुरक्षित होता मेरा देश

पिछले कुछ वर्षों में देश में पानी, बिजली, ईंधन, शौचालय, मकान आदि उपलब्ध कराने के साथ-साथ स्वच्छता के लिए देश भर में अभियान चलाकर आम नागरिकों के जीवन को सुगम बनाने का प्रयास किया गया है। स्वरोजगार हेतु सरल बैंक ऋण व्यवस्था तथा स्टार्टअप के लिए प्रोत्साहन सहित 'मेक इन इण्डिया' अभियान चलाकर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में अपने कारखाने प्रारम्भ करने को प्रोत्साहित कर बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर बढ़ाने के प्रयत्न हुए हैं। कोविड महामारी के दिनों से ही 81 करोड़ 35 लाख नागरिकों को दी जाने वाली मुफ्त खाद्यान्न योजना 2028 तक बढ़ाई गई जिस के अंतर्गत प्रति व्यक्ति 5 किलोग्राम खाद्यान्न प्रतिमाह दिया जाता है। दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं है जो इस तरह नागरिकों को मुफ्त भोजन या खाद्यान्न देता हो।

विश्व में सबसे तेज विकास दर

देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के प्रयत्न हुए हैं। दस वर्ष पूर्व तक पस्त पड़ चुकी विकास दर, भारी महंगाई और उत्पादन में कमी के दौर से उबरते हुए एनडीए सरकार ने ना सिर्फ मैक्रो इकानॉमिक फंडामेंटल्स को मजबूत किया, बल्कि अर्थव्यवस्था को एक तेज रफ्तार से विकास पथ पर ले आई है।

भारत की जीडीपी विकास दर अब उछाल लेकर 7 प्रतिशत हो गई है जो विश्व में सबसे अधिक है। यह अप्रैल 2014 में 5.55 प्रतिशत थी जो 2015(अप्रैल) में घटकर मात्र 2.65 प्रतिशत रह गई थी। भारतीय स्टेट बैंक के एक अध्ययन में हाल ही में कहा गया है कि वित्तीय वर्ष 2024 के लिए जीडीपी वृद्धि दर 8 प्रतिशत रह सकती है। आज शेयर बाजार रिकार्ड ऊँचाई पर है।

तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

पिछले 10 वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था विश्व में 10 वें स्थान से 5 वें स्थान पर पहुंच गयी है जो अगले 3 वर्षों में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।

आमजन के लिए किए गए कार्य

- **शौचालय निर्माण** -12 करोड़ से अधिक घरों में
- **नल से जल** - 8.67 करोड़ से अधिक परिवारों में
- **ग्रामीण नल कनेक्शन** - 3 करोड़ से बढ़कर 14 करोड़
- **मकान** - 4 करोड़ से अधिक परिवारों को
- **जन धन योजना में बैंक खाते** - 50 करोड़ से अधिक
- **मुफ्त राशन** - 81 करोड़ नागरिकों को
- **कोरोना वैक्सीन**- दो स्वदेशी वैक्सीन बनी, देशवासियों को 225 करोड़ नि:शुल्क डोज लगाई गई
- अनुसूचित जाति छात्रों को उच्च मैट्रिक छात्रवृत्ति के लिए 60 हजार करोड़ का प्रावधान
- **उज्ज्वला योजना** में मुफ्त गैस कनेक्शन 10 करोड़ माता-बहिनों को
- **स्वनिधि योजना**- रेहड़ी, फुटपाथ पर काम करने वालों के लिए ऋण योजना, 35 प्रतिशत महिलाओं को
- **विश्वकर्मा योजना में**- कामगारों को 3 लाख का सस्ता ऋण
- 9 वर्षों में 24.82 करोड़ लोग गरीबी सीमा से बाहर निकले

मेक इन इंडिया की सफलता

- घरेलू रक्षा उत्पादन में 12.7 प्रतिशत की वृद्धि
- मोबाइल फोन उत्पादन में 2 हजार प्रतिशत की वृद्धि
- मोबाइल फोन निर्यात में 7,500 प्रतिशत की वृद्धि
- इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के निर्यात में 200 प्रतिशत की वृद्धि
- भारतीय खिलौना उद्योग ने वित्त वर्ष 2014-15 की तुलना में आयात में 52 प्रतिशत की कमी तथा निर्यात में 239 प्रतिशत की वृद्धि
- **स्टार्टअप:** 2016 में 300 स्टार्ट अप की तुलना में जनवरी 2024 में 1 लाख 19 हजार
- रोजगार: वित्त वर्ष 2023 में कम्पनियों में 81.2 लाख नई नौकरियों का सृजन

मतदान न केवल हमारा अधिकार है, बल्कि यह हमारी शक्ति भी है

कुछ दिन में ही भारत मां का, शीश गगन में उठा दिया, जगतगुरु होने का सपना, लगभग सच कर दिखा दिया।

ऐसे कर्मवीर पुत्रों को, शुभ आशीष न दोगे क्या?

विरासत

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर

अम्बेडकर पंचतीर्थ निर्माण

नेताजी सुभाष बोस व सरदार पटेल की मूर्ति का निर्माण

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक, दिल्ली

विरासत
को संजोता
विकास
की ओर बढ़ता

विश्व में भारत का बढ़ता सम्मान

विकास

चन्द्रयान की सफलता

जीडीपी में बढ़ोत्तरी

घरेलू उत्पादों को बढ़ावा

- चौकस सीमा सुरक्षा
- स्वावलंबन
- आत्मनिर्भरता

- कश्मीर से हटाई धारा 370
- देश में आतंकी घटनाओं पर रोक

स्वरोजगार को प्रोत्साहन

बिना गारंटी ऋण

महिला सम्मान
- संसद व विधान सभा में आरक्षण
- तीन तलाक की समाप्ति

किसान विकास
- सम्मान निधि
- यूरियाकोटेड बीज
- सॉयल हेल्थ कार्ड

विरासत का संरक्षण एवं संवर्धन

देश में अपनी विरासत को संजोने और उसका संवर्धन करने का सर्वश्रेष्ठ कार्य हो रहा है। उत्तरप्रदेश में अयोध्या और काशी कॉरिडोर से लेकर मध्य प्रदेश का महाकाल कॉरिडोर और दक्षिण में हैदराबाद में संत रामानुजाचार्य की विशालकाय प्रतिमा स्थापित करना इसके साक्षात प्रमाण हैं। विकास के ये सोपान कुछ इस प्रकार हैं-

अयोध्या

श्रीराम मंदिर निर्माण के साथ ही अयोध्या का चहुंमुखी विकास हुआ। यहां एक नया हवाई अड्डा और नया रेलवे स्टेशन बनाया गया है। टाउनशिप का विकास हो रहा है। इसके तहत सड़क संपर्क में सुधार आया है और कुछ अन्य कार्य भी हुए हैं, जिनकी लागत लगभग 85,000 करोड़ रूपए है। एक अनुमान के अनुसार, अयोध्या में प्रतिवर्ष 5 करोड़ आगंतुकों के आने की उम्मीद है। यह संख्या वेटिंकन सिटी और मक्का जाने वाले श्रद्धालुओं से कहीं अधिक है।

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में भारत की ओर से 2.5 टन चंदन की लकड़ी भेंट की गई है।

काशी विश्वनाथ कोरिडोर का विकास

काशी विश्वनाथ कॉरीडोर के निर्माण के साथ 70 किमी. पंचकोशी मार्ग का सौन्दर्यीकरण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुआ है। गंगा में क्रूज संचालन, मल्टी मॉडल टर्मिनल, मल्टी लेवल पार्किंग आदि वाराणसी के विकास की पहचान हैं। काशी को एससीओ की पहली पर्यटन और सांस्कृतिक राजधानी के रूप में घोषित किया गया है।

बौद्ध सर्किट का विकास

महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन का अधिकांश समय इस परिपथ में बिताया था। धर्म के पवित्र स्थान, जहाँ भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था और वही पर उन्होंने शिक्षा, उपदेश और 'ज्ञान' और 'निर्वाण' प्राप्त किया, उन स्थानों को बौद्ध सर्किट कहा जाता है। ये बौद्ध धर्म, धार्मिक मंदिरों और पवित्र धार्मिक स्थलों के मठों के आध्यात्मिक घर हैं, जहाँ बौद्ध धर्म के अनुयायी स्वयं भगवान बुद्ध के उपदेशों से जुड़े हुए हैं। यहाँ नेपाल, भूटान, थाईलैंड, बर्मा, श्रीलंका, लाओस, मंगोलिया, वियतनाम, हांगकांग, सिंगापुर, ताइवान, कोरिया और हिमालय क्षेत्र से लाखों पर्यटक आते हैं।

अमरनाथ यात्रा ट्रैक

हर साल होने वाली अमरनाथ यात्रा को देखते हुए सरकार ने यात्रियों को सुरक्षित यात्रा की सुविधा देने के लिए यात्रा ट्रैक के रखरखाव पर विशेष कार्य किया है। यात्रियों की सुरक्षा के लिए यहाँ हवाई टनल का निर्माण किया गया है।

केदारनाथ का विकास

वर्ष 2013 में घटी केदारनाथ आपदा के बाद से धाम को फिर से बसाने के लिए सरकार द्वारा तीन चरणों का पुनर्निर्माण कार्य किया जा रहा है, लगभग पांच सौ करोड़ की लागत से पुनर्निर्माण कार्य होने हैं। वहीं आपदा प्रभावितों को सरकार पूर्व में ही मुआवजा दे चुकी है।

उज्जैन महाकाल कोरिडोर

800 करोड़ रूपए की लागत से बना महाकाल कोरिडोर काशी कोरिडोर से चार गुना बड़ा है।

अम्बेडकर पंचतीर्थ का विकास

घोषित अम्बेडकर पंचतीर्थ के पाँच शहर हैं:

जन्मभूमि- मध्य प्रदेश के महू में अंबेडकर का जन्मस्थान।

शिक्षा भूमि- लंदन में वह स्थान जहाँ वह अपने अध्ययन काल में रहते थे।

दीक्षा भूमि- नागपुर में वह स्थान जहाँ उन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

महापरिनिर्वाण भूमि- दिल्ली में उनके निधन का स्थान।

चैत्य भूमि- मुंबई में उनके अंतिम संस्कार का स्थान।

-इंडिया गेट पर जॉर्ज पंचम की मूर्ति के स्थान पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगाई गई।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा

गुजरात में भरूच के निकट नर्मदा जिले में स्थित टापू साधु बेट पर भारत के प्रथम गृह मंत्री सरदार पटेल की प्रतिमा 'स्टेचू ऑफ यूनिटी' बनाई गई है। यह सरदार पटेल द्वारा भारत के एकीकरण की प्रतीक है।

शिवाजी महाराज की प्रतिमा

6 मार्च 2022 को पुणे नगर निगम के परिसर में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण किया। 9.5 फीट ऊंची यह प्रतिमा 1850 किलोग्राम गनमेटल से बनाई गई थी।

समता की प्रतिमा : संत रामानुजाचार्य की हैदराबाद में 216 फुट ऊँची मूर्ति

11 वीं शताब्दी के वैष्णव संत रामानुजाचार्य की हैदराबाद में स्थित 216 फुट मूर्ति स्थापित की गई है। इसका लोकार्पण 5 फरवरी, 2022 को किया गया। इसे रामानुज प्रतिमा भी कहते हैं। यह 1000 करोड़ रूपए की लागत से बनी है।

आदि शंकराचार्य की 108 फुट ऊँची प्रतिमा

मध्यप्रदेश के खंडवा जिले में स्थित ओंकारेश्वर धाम में 21 सितम्बर 2023 को आदि शंकराचार्य के 12 वर्ष की आयु की 108 फुट ऊँची प्रतिमा का लोकार्पण किया गया।

गुजरात के पावागढ़ काली मंदिर का उद्धार

मंदिर का पुनर्विकास कर शिखर पर 500 वर्षों के पश्चात फहराई गई शिखर ध्वजा। मंदिर परिसर में स्थित दरगाह को स्थानान्तरित किया गया।

महाराष्ट्र के सप्तकोटेश्वर का जीर्णोद्धार

मंदिर को अलाउद्दीन और पुर्तगालियों द्वारा तोड़ा गया था अब उसका जीर्णोद्धार कराया गया है।

नेहरू युगीन लचर सुरक्षा व्यवस्था बनाम
वर्तमान में शक्तिशाली व सामर्थ्यवान होती भारतीय सेना

1962 में भारत पर हुए चीन के सैनिक हमले ने भारतीय सेना की दयनीय स्थिति सबके समक्ष उजागर कर दी थी। भारतीय सेना के पास प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के समय की एनफील्ड रायफलें थी। सुरक्षा के प्रति लापरवाही का आलम यह था कि अमेरिका से भेजी गई ऑटोमेटिक राइफलों को पैकिंग क्रेट्स (जिनमें पैक करके भेजी गई थीं) से बाहर भी नहीं निकाला गया था। इनको चलाने का प्रशिक्षण देना तो दूर की बात थी। भारतीय सैन्य अधिकारी और जवान बिना पर्याप्त हथियारों के मात्र अपनी हिम्मत और देश के प्रति जज्बे के साथ कब तक लड़ते? युद्ध लगभग एक तरफा हो रहा था। भारत का 32 हजार वर्ग मील का क्षेत्र चीन के कब्जे में आ चुका था। उस समय भारत में अमरीकी राजदूत जेके गालब्रेथ ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''हर स्तर पर भारतीय सदमे की हालत में थे। न सिर्फ असम बल्कि बंगाल और यहां तक कि कलकत्ता (अब कोलकाता) पर खतरे के बादल मंडरा रहे थे।''

चीन से मुकाबले की ऐसी दयनीय हालत में 'गुट निरपेक्षता' के पैरोकार भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू को अमेरिका के सामने घुटने टेकने पड़े। उन्होंने तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेडी को दो पत्र लिखे जिन्हें बहुत गुप्त रखा गया। इन पत्रों को अमेरिका द्वारा 2010 में सार्वजनिक किया गया। पत्र में नेहरू जी ने लिखा था कि अगर अमेरिका और ब्रिटेन ने साथ नहीं दिया तो पूरा असम, त्रिपुरा, मणिपुर और नागालैंड चीन के हाथ पड़ जाएगा। नेहरू ने अमेरिका से 350 युद्ध विमान मांगे तथा भारतीय सेना को इन्हें चलाने का प्रशिक्षण होने तक 10 हजार अमेरिकी स्पोर्ट स्टाफ की मांगी की थी। अमेरिका में तत्कालीन भारतीय राजदूत बीके नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''पहला पत्र ही हमारी गुटनिरपेक्षता की नीति के विरूद्ध था। दूसरा पत्र तो इतना दयनीय था कि इसे पढ़कर मुश्किल से अपनी शर्म और दु:ख पर नियंत्रण कर पाया।''

उपरोक्त सारी गाथा लिखने का उद्देश्य सिर्फ भारत की सुरक्षा व्यवस्था के प्रति नेहरू जी जैसे नेताओं की अनदेखी व दशा को दर्शाना मात्र है।

पिछले 8-10 वर्षों में भारतीय सेना हुई है मजबूत

वर्तमान केन्द्र की सरकार ने देश की सुरक्षा को महत्व देते हुए उल्लेखनीय प्रयत्न किए हैं, इनमें से कुछ निम्नांकित हैं-

1. रक्षा उपकरण और अन्य आवश्यक सामान

जवानों को ठंड से राहत देने के लिए विशेष वर्दी सहित जवानों के लिए मंगाए गए-

* बुलेट प्रूफ जैकेट
* ऐसे हल्के हेल्मेट जिन पर गोलियों का असर न हो। ऐसे हेल्मेट जिनके आधार पर रात्रि में भी देखा जा सके।
* अत्याधुनिक असाल्ट राइफल्स ।
* सैनिकों के लिए हल्के परंतु मजबूत जूते, सुरक्षा के अन्य उपकरण तथा हेडक्वार्टर से संपर्क के आधुनिक साधन।

2. बिजबिहाड़ा रनवे का निर्माण

इस नए रनवे से उड़ान भरने के बाद युद्धक विमान अगले तीन मिनट में पाकिस्तानी सीमा पर तथा 4 से 5 मिनट में चीनी सीमा पर पहुंच सकते है। लगभग 119 करोड़ की लागत आई।

3. पहला स्वदेशी युद्धपोत आईएनएस विक्रांत

इससे भारतीय नौसैना की ताकत कई गुना बढ़ी।

4. स्वदेशी एंटीशिप मिसाइल

पूर्णत: स्वदेशी नौसेना 'एंटीशिप मिसाइल' का सफल परीक्षण सफल रहा है। आज भारतीय सेना 'क्विक आर्मी' के नाम से पहचानी जाने लगी है।

5. एमएच-60 आर हेलीकॉप्टर

इससे नौसेना की क्षमता में होगी वृद्धि। इन सीहॉक हेलीकॉप्टरों के कारण अब चीन अथवा पाकिस्तान की पनडुब्बी भारत के तटीय तथा समुद्री इलाकों में जासूसी नहीं कर पाएगी।

6. सीमाओं की सुरक्षा के लिए अत्याधुनिक उपकरणों के साथ-साथ मजबूत तारबंदी तथा ड्रोन।

7. राफेल जैसे फाइटर जेट विमान व कई फाइटर जेटों का भारत में निर्माण।

8. 130 टेथर्ड ड्रोन और 19 टैंक ड्राइविंग सिमुलेटर।

भारत ने न केवल अपनी सेना के लिए रक्षा उत्पादों का निर्माण किया वरन 84 देशों को रक्षा उत्पाद बेचकर एक बड़ी सफलता प्राप्त की है।

9. सड़क, पुल, सुरंगों का निर्माण

पिछले 3 वर्ष में अरूणाचल प्रदेश में 5 हजार 71 किमी., लद्दाख में 453 किमी., उत्तराखंड में 343 किमी., सिक्किम में

अटल रोहतांग सुरंग

165 किमी. तथा हिमाचल में 40 किमी. सड़कें सीमा सुरक्षा की दृष्टि से बनाई गई हैं। बीआरओ ने सीमा क्षेत्र में 2 हजार 445 किमी. लंबी सड़कें, कई पुल, सैनिक आवास, सुरंगे व हैलीपैडों का निर्माण किया गया है।

10.पाकिस्तान की सीमा में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक

12 मिराज लड़ाकू विमानों ने सीमा से 80 किमी. पाक क्षेत्र में घुसकर आतंकी ठिकानों तथा आतंकियों का नाश किया। 29 सितंबर, 2016 को सर्जिकल स्ट्राइक तथा 26 फरवरी, 2019 को एआर स्ट्राइक की गई।

11.मिसाइलों का निर्माण

भारत ने पिछले कुछ वर्षों में सतह से सतह मार करने, सतह से हवा में मार करने, हवा से हवा में मार करने तथा हवा से सतह पर मार करने में सक्षम मिसाइलों का निर्माण किया है। भारत ने लघु, मध्यम और लम्बी दूरी की बैलेस्टिक मिसाइल क्षमता प्राप्त कर ली है।

12.समुद्री डाकुओं को सबक

समंदर में भारतीय नौसेना का बड़ा ऑपरेशन, समुद्री डाकुओं को सिखाया कड़ा सबक, 35 का सरेंडर, आईएनएस कोलकाता-सुभद्रा का जयघोष... 40 घंटे चले ऑपरेशन में अपहृत जहाज एमवी रुपन से चालक दल के 17 सदस्यों को सकुशल बचा लिया गया।

(राम)

अग्नि मिसाइल

मिराज लड़ाकू विमान

आतंकी गतिविधियों, प्रदर्शनों और पत्थरबाजी का केन्द्र श्रीनगर का

लाल चौक अब है पर्यटकों का पसंदीदा स्थल

जम्मू-कश्मीर से 5 अगस्त, 2019 को अनुच्छेद 370 हटाया गया था। पिछले 5 वर्षों में हुए विकास को देखकर अब वहां का सामान्य जन भी अनुच्छेद 370 को भूलने लगा है। किसी समय वहां के युवाओं का झुकाव अलगाव-आतंकवादी गतिविधियों की ओर था। उनके हाथ में पत्थर थमा दिए जाते थे। अब पत्थरबाजी इतिहास बन चुकी है। युवा अपने केरियर को संवारने में लगे हैं। कभी आतंकी गतिविधियों, अलगाववादी प्रदर्शनों और सेना पर पत्थरबाजी का केन्द्र रहा श्रीनगर का लाल चौक अब पर्यटकों का मनपसंद स्थल बनता जा रहा है। लोग मानने लगे हैं कि गत 70 वर्षों में कश्मीर घाटी बर्बाद हो रही थी। अब केन्द्र सरकार के 370 हटाने के साहसी निर्णय के कारण परिस्थितियों में बहुत बदलाव आया है। वहां विकास की नई गाथाएं लिखी जा रही हैं। अनुच्छेद 370 हटने के बाद वर्ष 2023 में रिकार्ड 2 करोड़ टूरिस्ट कश्मीर पहुँचे हैं। यह अब तक की सबसे ज्यादा संख्या है। यह लोगों में आतंकवादियों का भय समाप्त होने का भी संकेत है।

देश का भविष्य मतदाता के हाथ में है। मतदान अवश्य करें।

10 वर्ष पहले हुए कुछ प्रसिद्ध घोटाले

पिछले कुछ वर्षों से केन्द्र सरकार के स्तर पर किसी घोटाले का समाचार सामने नहीं आया जिसमें सरकार को राजस्व की हानि हुई हो। राजनैतिक दल एक दूसरे पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हैं, ये चुनावी बातें हैं और अपने विपक्षी पर ब्रह्मास्त्र छोड़ने जैसा है। परंतु यदि कोई घोटाला होता है तो उसकी एफआईआर दायर होती है, पुलिस-प्रशासन, सीआईडी या सीबीआई जांच होती है या कैग की जांच में मामला सामने आता है, परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ। हां,10 वर्ष पहले अवश्य कई सारे घोटाले किसी न किसी जांच में जनता के सामने आते रहे हैं जिनमें सरकार को करोड़ों-अरबों रुपयों की हानि हुई। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

कोल ब्लॉक आवंटन घोटाला

कैग के अनुसार यह घोटाला 1.86 लाख करोड़ रुपये का था। जिस अवधि में यह घोटाला हुआ, उसमें अधिकांश समय मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री के रूप में कोयला मंत्री भी थे।

2 जी टेलीकॉम घोटाला

कंपनियों को नीलामी की बजाए 'पहले आओ पहले पाओ' की नीति पर लाइसेंस दिए गए थे। इसमें सरकार को लगभग 1.76 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ।

एंट्रिक्स-देवास घोटाला

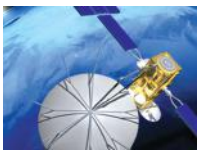

इसरो की वाणिज्यिक शाखा एंट्रिक्स कॉरपोरेशन और देवास मल्टीमीडिया प्रा.लि के बीच यह सौदा दुर्लभ एस-बैंड स्पेक्ट्रम से जुड़ा है। इससे सरकार को लगभग 2 लाख करोड़ रुपये का घोटाला होने का अनुमान है।

राष्ट्रमंडल खेल घोटाला

खेलों के आयोजन के नाम पर 2010 में 70 हजार करोड़ रुपये के घोटाले हुए। इसमें खेल योजनाओं, इसके कार्यान्वयन में व्यापक भ्रष्टाचार, कुप्रबंधन और फर्जीवाड़ा हुआ।

विमान खरीद घोटाला

यह मामला 2005-07 के बीच एयर इंडिया और इंडियन एयरलाइंस के लिए 111 विमानों की खरीद से जुड़ा है, जिससे सरकारी खजाने पर 50 हजार करोड़ रुपये का बोझ पड़ा।

खाद्यान्न घोटाला

सप्रग सरकार ने हर साल लगभग 58 हजार करोड़ रुपये के अनाज के सड़ने की बात कही पर इसके लिए भंडारगृह नहीं बनवाए। फिर सड़े हुए अनाज को 62 पैसे प्रति किलो के हिसाब से शराब माफिया को बेच दिया।

डायल घोटाला

यह सार्वजनिक निजी भागीदारी से दिल्ली अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (डायल) के कार्यान्वयन में भूमि घोटाले से जुड़ा है। इसमें 24 हजार करोड़ रुपये में दिया गया। इससे लगभग 50 हजार करोड़ का नुकसान हुआ।

शारदा चिट फंड घोटाला

पश्चिम बंगाल की चिटफंड कंपनी शारदा समूह ने 2008 में आम लोगों को ठगने के लिए कई लुभावने प्रलोभन दिए। लगभग 17 लाख निवेशकों को अनुमानित 40 हजार करोड़ रुपयों का चूना लगाया।

एल आई सी गृह ऋण घोटाला

यह 10 हजार करोड़ रुपये का कॉरपोरेट घोटाला था। इसमें एलआईसी सहित विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और वित्तीय संस्थानों के बड़े अधिकारियों ने मोटी कमाई के लिए बिचौलिए की भूमिका निभाई और बड़े पैमाने पर रियल्टी डेवलपर्स को कॉरपोरेट ऋण मंजूर किए।

रक्षा भूमि घोटाला

देश के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर अवैध तरीके से रक्षा भूमि बिल्डरों को वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए दे दी गई थी। यह घोटाला लगभग 10 हजार करोड़ रुपए का है।

हिंदुओं का हक मार रहे हैं मुसलमान

पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग आयोग की सूची में कुल 179 जातियां हैं। इनमें से मात्र 61 हिंदू और 118 मुस्लिम जातियां हैं। मुस्लिम जातियों को जान-बूझकर पिछड़ा बताकर हिंदुओं के अधिकारों पर डाला जा रहा है डाका

▪ अरूण कुमार सिंह

इस तथ्य के पक्ष में अनेक प्रमाण हैं कि पश्चिम बंगाल सरकार हिंदुओं के साथ सौतेला व्यवहार करती है। अब एक और प्रमाण सामने आया है। कुछ समय पहले ममता बनर्जी सरकार ने राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एन.सी.बी.सी.) को 83 पिछड़ी जातियों की एक सूची भेजी थी। इसमें 73 मुस्लिम जातियां और केवल 10 हिंदू जातियां हैं। इस सूची पर एन.सी.बी.सी. के अध्यक्ष हंसराज अहीर ने घोर आपत्ति दर्ज की है। उन्होंने कहा है कि इन 83 जातियों को पिछड़े वर्ग में शामिल करना संभव नहीं है, क्योंकि इनके बारे में राज्य सरकार ने आवश्यक जानकारी उपलब्ध नहीं कराई है। उन्होंने यह भी कहा कि आयोग ने राज्य के मुख्य सचिव को चार बार बुलाया, लेकिन वे नहीं आए और न ही इसके बारे में कोई जानकारी दी। इसलिए सूची को मान्यता नहीं दी जा सकती।

प. बंगाल में बांग्लादेशी मुस्लिमों की बड़ी संख्या है (फाइल चित्र)

बता दें कि इस समय राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की सूची में पश्चिम बंगाल की 98 जातियां शामिल हैं, जबकि पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग आयोग की सूची में कुल 179 जातियां हैं। इनमें से 61 हिंदू और 118 मुस्लिम जातियां हैं। आंकड़ों के अनुसार पश्चिम बंगाल में लगभग 71 प्रतिशत हिंदू और करीब 27 प्रतिशत मुसलमान हैं। इस अनुपात से राज्य के पिछड़े वर्ग की सूची में हिंदू जातियां अधिक होनी चाहिए थीं, लेकिन वोट बैंक की राजनीति करने वाले नेताओं ने ऐसा हिसाब लगाया है कि अब पश्चिम बंगाल में हिंदू पिछड़ी जातियों से अधिक मुस्लिम पिछड़ी जातियां हो गई हैं। एक जानकारी के अनुसार जिन 73 मुस्लिम जातियों को पिछड़े वर्ग में शामिल करने की बात कही गई है, उनमें से कई बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिए हैं। सबको पता है कि पश्चिम बंगाल में भोटिया मुसलमान कहां से आए हैं। दरअसल ये लोग बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं और इन्हें राज्य सरकार ने पिछड़े वर्ग में शामिल कर लिया है। इस कारण राज्य में बड़ी संख्या में मुस्लिम घुसपैठिए भी सरकारी नौकरी कर रहे हैं।

पिछड़े वर्ग के लिए निर्धारित आरक्षण का ज्यादातर लाभ मुसलमान उठा रहे हैं। उदाहरण के लिए पश्चिम बंगाल के चिकित्सा महाविद्यालयों को लिया जा सकता है। इन महाविद्यालयों में 3 हजार 351 सीटें है। इनमें से 457 सीटें 'ए' श्रेणी में भी शामिल पिछड़ी जातियों को मिलती हैं, और इस 'ए' श्रेणी में 91 प्रतिशत मुसलमान हैं। इस आधार पर इनमें से 400 सीटें मुसलमानों के पास चली जाती हैं। केवल 57 सीटें हिंदू पिछड़ी जातियों को मिलती हैं। इस्लाम के अनुसार उसके यहां जाति की 'अवधारणा' ही नहीं है, पर उसके लोग जाति के नाम पर आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं। वस्तुत: इसके लिए वे नेता जिम्मेदार हैं, जो वोट बैंक की राजनीति करते हैं। इसलिए वोट बैंक की राजनीति को खत्म करना होगा।

(पांचजन्य, 17 मार्च, 2024 से साभार)

मजहब के आधार पर आरक्षण

भारत के संविधान द्वारा किसी धर्म विशेष को बढ़ावा देने के किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता पर प्रतिबंध लगाया गया है। परंतु, वोटों की राजनीति के चलते सरकारें मुस्लिम तुष्टिकरण से बाज नहीं आतीं।

तमिलनाडु सरकार ने मुसलमानों और ईसाइयों प्रत्येक के लिए 3.5 प्रतिशत आरक्षण दे रखा है। आंध्र प्रदेश ने 4 प्रतिशत मुस्लिम आरक्षण का प्रावधान किया था। आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने मुसलमानों के लिए किए गए इस आरक्षण के आदेश को रद्द कर दिया था। परंतु सर्वोच्च न्यायालय द्वारा उसे बरकरार रखा गया।

वर्ष 2014 में तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के चन्द्रशेखर राव ने चुनावों में मुसलमानों को 12 प्रतिशत आरक्षण देने का वादा किया था। राज्य सरकार ने जनवरी 2017 में इस संबंधी कानून पारित कर केन्द्र के पास स्वीकृति के लिए भेजा था, परंतु केन्द्र की भाजपा सरकार ने तेलंगाना के अनुरोध को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि धर्म आधारित आरक्षण की अनुमति नहीं दी जा सकती।

केजरीवाल जी! राजनीति की कौन सी परिभाषा गढ़ना चाहते हैं 'आप'

आम आदमी को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने का दावा करके राजनीति में कूदे आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल, जो अब दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं, तिहाड़ जेल में हैं।

कारण, देश-दुनिया को मालूम है दिल्ली सरकार का शराब घोटाला, जो पिछले तकरीबन डेढ़ साल से समाचारों की सुर्खियों में है। इस घोटाले में आप पार्टी की दिल्ली सरकार में मंत्री रहे मनीष सिसोदिया और संजय सिंह पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। इसी घोटाले में 'आप' पार्टी मुखिया और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भी जांच में ईडी द्वारा दोषी पाए गए। जांच एजेंसी ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) ने केजरीवाल को एक के बाद एक करीब नौ सम्मन भेजे। इसकी अवहेलना कर केजरीवाल कभी किसी बहाने तो कभी किसी बहाने ईडी के समक्ष उपस्थित होने से बचते रहे।

हद तो तब हो गई जब ईडी के सामने उपस्थित होने से बचते रहने वाले केजरीवाल सीधे पहुँच गए जनता के बीच और सीएए को लेकर फिर कपोल कल्पित दावे करने लग गए। देश की चिंता उन्हें एक बार फिर से सताने लगी और वे शीश महल से निकल कर कहने लगे ''भाईयो! अगर सीएए आ गया तो बाहर से आने वाले शरणार्थी आपकी नौकरियां खा जाएंगे।'' आप पार्टी तिल-तिल करके बिखरती दिखाई दे रही है। कुछ समझदार लोग इस डूबते जहाज से पहले ही उतर गए थे। जैसे कुमार विश्वास, शाजिया इल्मी, कपिल शर्मा, प्रशांत भूषण आदि। समाजसेवी अन्ना हजारे के नाम पर भ्रष्टाचार मिटाने केजरीवाल दिल्ली में आंदोलन करने बैठे थे, आज वे स्वयं भ्रष्टाचार के दलदल में फंसे दिखाई दे रहे हैं। अपने नियुक्त किए गए लोकपाल एडमिरल रामदास को केजरीवाल एंड पार्टी ने कब हटा दिया, स्वयं उन्हें भी इस बात की जानकारी नहीं दी गई थी। यह है केजरीवाल का

राजनीति करने का नया अंदाज। परंतु जनता सब जानती है। काठ की हांडी एक ही बार चढ़ती है। इस बार केजरीवाल 'सीएए' वाला पैंतरा चुनावी चौसर पर चलते इससे पहले ही, भ्रष्टाचार के आरोप में जेल चले गए और उनकी पत्नी (हो सकता है भावी सीएम बनने की अभिलाषी) श्रीमती सुनीता केजरीवाल जनता को फिर मूर्ख बनाने को कह रही है -'आपका भाई आपका बेटा जेल में है उसे प्रतिद्वंद्वी दल ने चुनाव मैदान से बाहर रखने के लिए जेल भेज दिया है।'' अब इन्हें कौन बताए चुनाव मैदान में तो सारे ही नेता है... सब तो जेल नहीं भेज दिए गए। हां यह जरूर है कि एक बार फिर रामलीला मैदान इन सभी ''चोर-चोर मौसेरे भाइयों'' की झूठी एकजुटता का साक्षी बनने को मजबूर हुआ। चुनाव के बहाने केजरीवाल और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सोरेन के समर्थन में उतरे आधे-अधूरे इंडी गठबंधन ने एक मंच पर एकत्रित होकर एक प्रकार से अप्रत्यक्ष घोषणा कर दी कि वे चुनाव हार रहे हैं।

सूचना प्रसारण के आज के अत्याधुनिक दौर में हर घर टीवी पर हर मिनट समाचार अपडेट से देश का सबसे बड़ा वोटर आम आदमी केजरीवाल की सारी राजनीति समझ गया है। यह नई प्रकार की राजनीति है। इसमें वाकई सिर्फ नीति है, नैतिकता का कोई स्थान नहीं। केजरीवाल अपनी हठ नीति पर अड़े रहे और बिना पद से इस्तीफा दिए ही जेल चले गए। जेल जाने से पहले ही उनकी नीति तैयार थी और वे दोहराते रहे कि मुझे जेल भेज दो तो जेल से ही दिल्ली की सरकार चलेगी। लेकिन इस्तीफा नहीं दूंगा। आप भले ही देश में जन्मे राजनेता हैं लेकिन आपकी राजनीति की फंडिंग विदेश से भी होती है।

भ्रष्टाचार का यह शीशमहल धीरे-धीरे चकनाचूर होना दिखाई दे रहा है। केजरीवाल ने स्वयं को बचाने के लिए आप पार्टी की प्रवक्ता और मंत्री आतिशी मार्लेना सिंह और सौरभ भारद्वाज का नाम ईडी के समक्ष ले लिया। आंच अपने तक पहुँचते देख आतिशी ने अगले दिन बड़ा खुलासा करने का ढकोसला रचने के बहाने अपनी ही पार्टी के दो और लोगों राघव चड्ढा और दुर्गेश पाठक का नाम ले लिया। साथ में फिर निचले स्तर की राजनीति कर गई। किसी का नाम बताए बिना भारतीय जनता पार्टी पर आरोप लगा दिया कि उन्हें बीजेपी में शामिल होने का ऑफर दिया गया था। इसीलिए उनका नाम इस घोटाले में आया। मैडम! नाम तो आपका जांच एजेंसी को आपके ही भाई ने बताया है।

खैर, पलटवार होना ही था। अब भाजपा की शिकायत पर चुनाव आयोग ने आतिशी को नोटिस देकर पूछा है कि किसने ऑफर दिया?

मतदाता और राजनीति के पंडित इस विषय पर पूरी नजर रखे हुए हैं। केजरीवाल ड्रामा अभी जारी है...
देखते रहिए...

(हेमलता चतुर्वेदी)

दो दिवसीय मेवाड़ टॉक फेस्ट संपन्न

युवाओं को साहित्य संवाद का सर्वश्रेष्ठ अवसर हैं ऐसे आंचलिक आयोजन

युवाओं को साहित्यिक व संस्कृति संबंधी गतिविधियों से जोड़ने के लिए बड़े शहरों और राजधानियों में ही नहीं बल्कि अंचल स्तर पर भी साहित्य-संवाद कार्यक्रमों का आयोजन स्वागत योग्य है। ऐसे आयोजन, जिनमें वे न सिर्फ दर्शकों के रूप में शामिल हों बल्कि सक्रिय भागीदारी भी निभाएं। कुछ इसी प्रकार की अवधारणा के साथ गत 30-31 मार्च को झीलों की नगरी उदयपुर में दो दिवसीय समारोह ''मेवाड़ टॉक फेस्ट'' का आयोजन किया गया। महोत्सव की थीम रखी गई-''उदीयमान भारत''।

रश्मि सामंत ने उडुपी से ऑक्सफोर्ड तक के अनुभवों पर की चर्चा

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पहली महिला छात्रसंघ अध्यक्ष व 'अ हिन्दू इन ऑक्सफोर्ड' की लेखिका रश्मि सामंत ने मेवाड़ टॉक फेस्ट के शुभारंभ सत्र में भारत के टेम्पल टाउन उडुपी से ऑक्सफोर्ड तक के अपने अनुभवों के बारे में बताया और कहा कि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने उनके मन में इस विश्वविद्यालय में पढ़ने की उत्कंठा पैदा की। सामंत ने मेकेनिकल इंजीनियर की स्टूडेंट के रूप में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन किया है। वहां उन्होंने एक गणेश प्रतिमा के नीचे लिखी कुछ पंक्तियों में सनातन संस्कृति के प्रति पाश्चात्य अवधारणा और अपने कटु अनुभवों की शुरुआत की जानकारी दी। उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पहली महिला छात्रसंघ अध्यक्ष बनने, फिर इस पद से इस्तीफा देने व उसके बाद तक के संघर्ष के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पश्चिमी संस्कृति में हमारे इतिहास, कला, संस्कृति और सनातन मूल्यों पर हमला किया गया है। ऑक्सफोर्ड में उन्हें इसी प्रकार के कटु अनुभव हुए। उन्होंने युवाओं को बताया कि आज गुलामी की मानसिकता को त्यागने व नेतृत्व क्षमता का विकास करने की आवश्यकता है। साथ ही कहा कि सफलता तभी मिलती है जब सकारात्मक चिंतन व दृढ़ इच्छा के साथ प्रयास किए जाए। इस चर्चा सत्र के मॉडरेटर थे सुखाड़िया विश्विद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष व साहित्यकार डॉ. कुंजन आचार्य । सत्र में सामंत ने लोगों के सवालों के भी जवाब दिए।

लक्ष्मीनारायण भाला ने बताया संविधान में राम, कृष्ण की तस्वीरों का महत्व

टॉक फेस्ट के दूसरे सत्र में संविधान विशेषज्ञ, समाजसेवी एवं संस्कृतिकर्मी लेखक लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खी दा' ने भारत के संविधान में भगवान राम और कृष्ण तथा सनातन संस्कृति सम्बन्धी तस्वीरों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। लक्खी दा कला प्रेमी, लेखक, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, असमिया,बांग्ला, मराठी, नेपाली और मारवाड़ी भाषा एवं उड़िया तथा गुजराती के अच्छे जानकार हैं। लक्खी दा ने अपनी पुस्तक 'संविधान भाव एवं रेखांकन' पर चर्चा करते हुए बताया कि संविधान के विविध पृष्ठों पर चित्रकार नन्दलाल बोस द्वारा उकेरे गए चित्र पृष्ठों की साज-सज्जा के लिए नहीं अपितु प्रत्येक पृष्ठ की विषय वस्तु और परिवेश के आधार पर रचे गए हैं। ये पाठक को विषय वस्तु के बारे में स्पष्टता से समझाने में सहायक हैं। उन्होंने संविधान में चित्रों के भावों पर आधारित पुस्तक के लेखन की पृष्ठभूमि के बारे में बताया। साथ ही संविधान के निर्माण की कहानी भी बताई । इस दौरान भाला ने

सामाजिक चेतना के अग्रदूत संत बसवेश्वर

संत बसवेश्वर का जन्म बीजापुर जिला (कर्नाटक) स्थित बागेवाड़ी गांव में अक्षय तृतीया (इस बार 10 मई) के दिन हुआ था। माता-पिता ने शिव वाहन वृषभ/नंदी के नाम पर अपने पुत्र का नाम वृषभ रखा। संस्कृत शब्द 'वृषभ' का ही कन्नड़ रूप है 'बसव'। इसी बालक को बाद में बसवेश्वर के नाम से पहचान मिली। आठ वर्ष की आयु में वे घर छोड़ अध्ययन के लिए कुडालसंगम (जो बाद में लिंगायतों का प्रमुख तीर्थ स्थल बना) चले गए। जहां गुरु संगमेश्वर के पास रहकर उन्होंने अध्ययन किया। मानव धर्म के मूल सिद्धातों को अपने जीवन में उतारकर उनका प्रचार-प्रसार करने वाले बसवेश्वर ने आध्यात्मिक ग्रंथों को संस्कृत से कन्नड़ में प्रस्तुत कर जनसाधारण के लिए उन्हें सहज सुलभ कराने का महान कार्य किया।

समाज से ऊँच-नीच के भेद को समाप्त करने के उद्देश्य से लोकतांत्रिक आधार पर 'अनुभव मंडप' की स्थापना की। बसवेश्वर द्वारा स्थापित अनुभव मंडप जिसे विश्व की पहली लोकसभा कहा जाता है, में 700 पुरुष और 70 महिलाएं थी। मंडप में पुरुषों के समान ही स्त्रियों को भी धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में कार्य की पूर्ण स्वतत्रंता थी। इसका सदस्य किसी भी जाति या वर्ग का कोई भी पुरुष या महिला हो सकती है।

विधवा विवाह और अंतरजातीय विवाह को प्रोत्साहन देने के प्रयास उस समय में सोच के दायरे से भी दूर थे। ऐसे में बसव पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रचलित रुढ़ियों के विपरीत जाकर एक ब्राह्मण कन्या का विवाह पिछड़ी जाति के व्यक्ति से करवाने पर अपनी सहमति प्रदान की थी।

बसवेश्वर ने अपने अनुभवों को गद्यात्मक-पद्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया, जिसे वचन कहा जाता है। जिसका अर्थ होता है 'जो कहा गया है'। 12वीं से 16वीं शताब्दी के मध्य लगभग 300 ऐसे वचनाकार हुए हैं जिनमें 30 महिलाएं हैं। इनमें सबसे ख्याति नाम बसवेश्वर का है। कालांतर में कर्नाटक सरकार उनके वचन संग्रह (कन्नड़ साहित्य की एक विद्या) को 15 खण्डों में प्रकाशित किया। उनकी रचनाओं का 23 भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

वे जन्म आधारित व्यवस्था की जगह कर्म आधारित व्यवस्था पर विश्वास रखते थे। उन्होंने एक नए संप्रदाय वीरशैव लिंगायत की स्थापना की। शैव सम्प्रदाय को मानने वाले लिंगायत संप्रदाय के लोग आज कर्नाटक के साथ-साथ महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु में बड़ी संख्या में हैं। ये लोग महात्मा बसव की शिक्षाओं के अनुगामी हैं।

अपने अल्पकाल के जीवन में उन्होंने सामाजिक समरसता हेतु अभूतपूर्व कार्य किया इसीलिए विद्वानों ने उस कालखण्ड को 'बसवेश्वर युग' का नाम दिया। लोकतंत्र, सामाजिक चेतना और नारी सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयास आज भी हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। सादा जीवन उच्च विचार का आदर्श प्रस्तुत करने के कारण 900 वर्ष बाद भी बसव समाज सुधारकों के लिए वंदनीय व अनुकरणीय बने हुए हैं।

संत बसव के सम्मान में 28 अप्रैल, 2023 में भारतीय संसद में तत्कालीन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने उनकी प्रतिमा का अनावरण किया। इसके अलावा 11 मई, 1967 तथा 1997 में भारत सरकार ने स्मारक डाक टिकट जारी किए।

14 नवम्बर, 2015 को लंदन स्थित टेम्स नदी के किनारे प्रधानमंत्री मोदी ने 108 फीट ऊँची प्रतिमा का अनावरण किया जो समाज परिवर्तन और मातृशक्ति हेतु किये गये प्रयासों व संघर्ष का स्मरण कराता है। ■

(मनोज गर्ग)

संभागियों के प्रश्नों का भी जवाब दिया। भाला के सत्र की मॉडरेटर लॉ कॉलेज की राजश्री चौहान थीं।

पुस्तक राम जन्मभूमि का विमोचन

फेस्ट में मुख्य अतिथियों द्वारा रश्मि सामंत की पुस्तक 'राम जन्मभूमि' का विमोचन हुआ।

बुक फेयर में उमड़ा उत्साह

युवाओं को स्तरीय पुस्तकों और साहित्य के प्रति अनुरागी बनाने के उद्देश्य से एक पुस्तक मेले का भी आयोजन किया गया। इसमें 11 प्रकाशकों की 1 हजार से अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गई। फेस्ट में भाग लेने पहुंचे लोगों ने विभिन्न विषयों सम्बन्धी प्रेरक पुस्तकों का अवलोकन किया और बड़ी संख्या में पुस्तकों की खरीद भी की।

'बंगाल 1947' फिल्म की स्क्रीनिंग

हाल ही रिलीज फिल्म 'बंगाल 1947' की स्क्रीनिंग फेस्ट में की गई। दर्शकों ने फिल्म में दिखाए गए नारी शक्ति के उद्धरणों की सराहना की। जैसे फिल्म में एक संवाद था-'वेदों की रचना में 49 ऋषिकाओं की रचनाएं भी शामिल हैं।' एक अन्य संवाद में यह भी बताया गया कि शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच हुए शास्त्रार्थ की निर्णायक भी मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती थीं, जो प्राचीन काल में महिलाओं के उच्च शिक्षा प्राप्त करने का साक्षात प्रमाण है। फिल्म में यह भी बताया गया था कि यदि प्राचीन काल में छुआछूत या जाति भेद होता तो प्रभु श्री राम शबरी के झूठे बेर नहीं खाते।

इस दौरान दर्शकों ने लेखक-निर्देशक आकाशादित्य लामा व अभिनेता अंकुर अरवम के साथ संवाद किया और फिल्म की विषय वस्तु और निर्माण के बारे में प्रश्न पूछे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन व युवाचिंतक मौजूद रहे। ■

मातृभूमि की रक्षा एवं संस्कृति को अक्षुण्ण रखने में राजस्थानी आगे

अच्छा हो कि राजस्थान दिवस 'वर्ष प्रतिपदा' को मनाया जाए

इंग्लैण्ड के विख्यात कवि किप्लिंग का मानना था कि दुनिया में यदि कोई ऐसा स्थान है, जहां वीरों की हड्डियां मार्ग की धूल बनी हैं तो वह राजस्थान है। यह हमारे इतिहास की सच्चाई है। देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की परम्परा आज भी राजस्थान में कायम है। जिस दिन जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर और बीकानेर रियासतों का विलय होकर वृहत्तर राजस्थान संघ बना वह 30 मार्च, 1949 का दिन था। इसी तारीख को राजस्थान की स्थापना का दिन माना जाता है। प्रत्येक वर्ष 30 मार्च को हम राजस्थान की अमर गाथा का अपनी सुनहरी यादों में स्मरण कर इसे राजस्थान दिवस के रूप में मनाते हैं।

परंतु नव वर्ष समारोह समिति, जयपुर ने प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र लिखकर मांग की है कि राजस्थान दिवस 30 मार्च के स्थान पर नव संवत् (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) पर मनाया जाए। समिति के प्रवक्ता महेन्द्र सिंहल ने बताया कि संयुक्त राजस्थान का उद्घाटन चैत्र शुक्ला एकम (प्रतिपदा) संवत् 2006 तदनुसार 30 मार्च, 1949 को प्रात: 10: 40 बजे रोहिणी नक्षत्र (इंद्रयोग) में तत्कालीन उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया था।

उदयपुर में महाराजस्थान के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित तत्कालीन उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल

सरदार पटेल ने संयुक्त राजस्थान का उद्घाटन करते समय दिए गए अपने भाषण में कहा था – ''राजपूताना में आज नए साल का प्रारंभ है। यहां आज के दिवस साल बदलता है। शक (संवत्) बदलता है। यह नया वर्ष है। तो आज के दिन हमें नए महा-राजस्थान के महत्व को पूर्ण रीति से समझ लेना चाहिए। आज अपना हृदय साफ कर ईश्वर से हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें राजस्थान के लिए योग्य राजस्थानी बनाये। राजस्थान को उठाने के लिए, राजपूतानी प्रजा की सेवा के लिए, ईश्वर आपको शक्ति और बुद्धि दे। आज इस शुभ दिन हमें ईश्वर का आशीर्वाद मांगना है। मैं उम्मीद करता हूं कि आप सब मेरे साथ राजस्थान की सेवा की इस प्रतिज्ञा में इस प्रार्थना में शरीक होंगे।''

राजस्थान के लोग अपनी कड़ी मेहनत के लिए जाने जाते हैं। भौगोलिक विषमताओं और प्राकृतिक चुनौतियों के बावजूद यहां के नागरिक दृढ़ इच्छा शक्ति और आपसी सहयोग से आगे बढ़ रहे हैं।

पूर्व में राजपूताना कहे जाने वाले राजस्थान का इतिहास गौरवशाली रहा है जिस पर हर प्रदेशवासी को गर्व है। मातृ भूमि की रक्षा एवं परम्पराओं तथा संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में यहां के लोगों ने सदैव पहल की। अच्छा हो कि राजस्थान दिवस चैत्र शुक्ल एकम् को मनाकर एक स्वस्थ परंपरा स्थापित की जाए।

-प्रो. मोनिका ओझा खत्री
(पूर्णिमा विश्वविद्यालय में प्रबंध विभागाध्यक्ष)

राजस्थान में नवनिर्वाचित सरकार ने हाल ही में कार्य प्रारंभ किया है। उनके सामने राजस्थान दिवस वर्ष प्रतिपदा को मनाने संबंधी विषय रखा गया या नहीं, कहा नहीं जा सकता, परंतु इसकी मांग उठी है। मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिखा गया है और समाचार पत्रों में इस संबंधी समाचार भी प्रकाशित हुए है। अधिकारियों द्वारा सारा विषय मुख्यमंत्री और उनकी सरकार के ध्यान में लाया जाना चाहिए। यह उचित ही होगा कि आने वाले वर्ष से राजस्थान दिवस 30 मार्च के स्थान पर चैत्र शुक्ल एकम को मनाया जाए।

–संपादक

कोटा कैथून में राम बारात पर जेहादियों का हमला

समाज की संगठित शक्ति से प्रशासन आया घुटनों पर

लाठी चार्ज करने वाले थानेदार व पुलिसवालों को किया निलंबित

कोटा जिले के कैथून कस्बे से बीते दिनों निकाली जा रही राम बारात पर जेहादियों ने हमला करते हुए माता-बहनों के साथ अभद्रता की।

हिंदू समाज द्वारा थाने पर विरोध प्रकट करने पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया। इस घटना में आक्रोशित हुए सर्व हिंदू समाज ने अगले दिन कैथून बंद रखने की धमकी दी तथा आस पास के गांवों से हजारों की संख्या में कैथून आकर फिर से राम बारात निकालने का निर्णय लिया। सर्व समाज की संगठित शक्ति के सामने प्रशासन को झुकना पड़ा।

आह्वान के पश्चात 31 मार्च को प्रशासन द्वारा हिंदू समाज की सभी मांगे मान ली गयी जिसमें प्रशासन द्वारा सभी आरोपी जेहादियों को कठोरतम धाराओं में मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया और हिंदू समाज पर लाठीचार्ज करने के आरोप में थानाधिकारी समेत अन्य पुलिसकर्मियों को निलंबित किया गया। सर्व हिन्दू समाज की संघर्ष समिति ने बैठक करके सर्व सहमति से कैथून बंद के आह्वान को वापिस लिया तथा दोबारा उसी मार्ग से नववर्ष कार्यक्रम के दौरान राम बारात निकालने का निर्णय लिया।

आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय के लिए एकत्रित किए 1.11 करोड़

जागरण जनसेवा मंडल के माध्यम से जनजाति अंचल में जरूरतमंदों की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर सेवा की अलख जगा रहे पद्मश्री मूलचंद लोढ़ा के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित अमृत महोत्सव एवं आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय आत्मनिर्भर समारोह आयोजित हुआ।

अंधता निवारण के क्षेत्र में जागरण जनसेवा मंडल द्वारा संचालित इस नेत्र चिकित्सालय को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से संस्था द्वारा जनसहयोग से एकत्रित 1 करोड़ 11 लाख 11 हजार 111 रुपए की राशि संस्थापक मूलचंद लोढ़ा को दी गई। कार्यक्रम के दौरान प्रताप परिसर में जागरण अमृत महोत्सव टावर का निर्माण करने की घोषणा की गई। गुरु राजेश्वरानंद जी के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के पूर्व कुलपति डॉ. लोकेश सिंह शेखावत रहे। अध्यक्षता गुजरात के प्रसिद्ध उद्योगपति व समाज सेवी सुरेशचन्द्र पंड्या ने की।

नोखा

महिलाओं की प्रेरणा बनीं 92 साल की पाना देवी

कहते हैं कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो उम्र बाधा नहीं बनती। इसे सही कर दिखाया है बीकानेर के नोखा (अणखीसर गांव)की 92 वर्षीय पाना देवी गोदारा ने।

उन्होंने पुणे में आयोजित 44वीं नेशनल मास्टर एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2024 में तीन गोल्ड मेडल जीत कर इतिहास रच दिया,वो भी अलग-अलग खेल प्रतियोगिताओं में। उन्हें यह मेडल 100 मीटर गोला फेंक व तश्तरी फेंक प्रतिस्पर्धा में मिले। पाना देवी अब वर्ल्ड चैंपियनशिप खेलने के लिए अगस्त में स्वीडन जाएंगी।

सुबह जल्दी उठना, फास्ट फूड न खाना सेहत का राज

पाना देवी की जीत और सेहत का मंत्र नई पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। उन्होंने बताया कि उन्होंने कभी फास्ट फूड, डिब्बा बंद खाना और ठंडे पानी का सेवन नहीं किया है। सुबह जल्दी उठना और घर के काम में मदद करना उनकी दिनचर्या का हिस्सा है। उन्होंने बताया कि सालों से उन्होंने कोई मेडिसिन नहीं ली है।

वागले के सपने

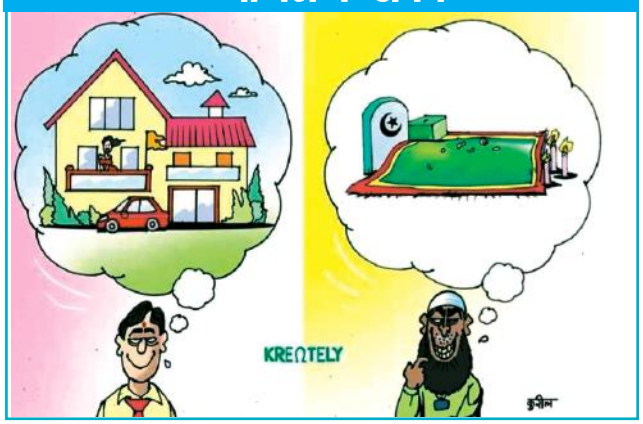

सेवा भारती पर अपमानजनक कंटेंट प्रसारित करने वाले यू ट्यूबर को न्यायालय का आदेश

सेवा भारती को दे 50 लाख रुपए का हर्जाना

संघ कार्य को यशस्वी होता देख कर अब हिंदुत्व और भारत विरोधी ताकतों ने सेवा जैसे पुण्य कार्य करने वाली संस्था सेवा-भारती को भी नहीं छोड़ा। सेवा भारती के माध्यम से देशभर में एक करोड़ से ज्यादा सेवा कार्य नि:स्वार्थ भाव से वर्तमान में संचालित हो रहे हैं। परंतु एक यू ट्यूबर सुरेन्द्र ने सेवा भारती पर अनर्गल कई आरोप लगाए। इतना ही नहीं, दो ईसाई पी जयराज और उनके बेटे बेनिक्स की तमिलनाडु पुलिस हिरासत में हुई मृत्यु को यू ट्यूबर ने तमिलनाडु सेवा भारती ट्रस्ट से जोड़ने का प्रयास किया।

सेवा भारती की ओर से यू ट्यूबर सुरेन्द्र उर्फ नाथिकन के विरुद्ध मद्रास उच्च न्यायालय में प्रस्तुत वाद में न्यायालय ने पाया कि यू ट्यूबर सुरेन्द्र के कार्यक्रम की सामग्री मानहानिकारक थी। इसलिए न्यायालय ने यू ट्यूबर को आदेश दिया कि वह सेवा भारती को 50 लाख रुपए का हर्जाना दे।

विलुप्त होती गौरेया के लिए घरों में लगाए जा रहे हैं घरौंदे

घरों में या घरों के आसपास अक्सर दिखाई देने वाली गौरेया चिड़िया के अस्तित्व पर ही संकट आ गया है। एक जानकारी के अनुसार भारत में गौरेया की संख्या में 60 प्रतिशत की कमी आई है। इसे देखते हुए उदयपुर महानगर में संचालित पर्यावरण संरक्षण गतिविधि ने गौरेया संरक्षण के लिए प्रयास आरंभ कर दिए हैं। संयोजक मनीष मेघवाल ने बताया कि घरों की बालकनी में या छत पर हाथ से गौरेया का घोंसला लगाने के लिए लोगों को प्रेरित किया जा रहा है।

घर के बाहर लगे पेड़ों पर परिंडे बांधे जा रहे हैं। पक्षी के चुग्गे के लिए पात्र लगाए जा रहे हैं। युवकों को पर्यावरण संरक्षण का संकल्प कराया गया है।

गौरेया चिड़िया को विलुप्त होने से बचाने के लिए प्रति वर्ष 20 मार्च को गौरेया दिवस भी मनाया जाने लगा है।

उत्तर जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं: 1. पाली और जालोर 2. वनवासी समाज 3. केरल 4. जैसलमेर 5. तारा दुर्ग, अजमेर 6. राणा उदयसिंह 7.1527 में 8. धौलपुर 9. दंडी 10. आत्माराम पांडुरंग

यह राम वर्ष है...

▪ तृप्ति शर्मा,

यह समय सुनहरा है अपनी
विजय केतु फहराने का।
बहुत खो चुकी भारत माता
वह सब वापिस पाने का।।
ज्ञान-विज्ञान धर्म-संस्कृति
हर क्षेत्र में नाम कमाने का।
मानवता का रक्षक बन जग में
शान्ति ध्वज फहराने का।।

आर्य वीरों यह रामवर्ष है
तैयारी में जुट जाने का।
केवल शासक सामर्थ्य से निश्चित
समय नहीं सो जाने का।।
ना थोड़ी सी उपलब्धि पर
अधजल गगरी छलकाने का।
है समय उचित उत्कृष्ट सनातन
शाश्वत सत्य बनाने का।।

कोटि-कोटि बलिदानों को
पावन सम्मान दिलाने का।
यह समय सुनहरा है अपनी
विजय केतु फहराने का।।

- मुरलीपुरा, जयपुर

मदरसों को सरकारी सहायता देने को उच्च न्यायालय ने बताया संविधान विरोधी

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच ने बीती 22 मार्च को अपने एक दूरगामी प्रभाव वाले महत्वपूर्ण निर्णय में राज्य सरकार द्वारा मदरसों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता को असंवैधानिक बताया। न्यायालय ने कहा कि ऐसा करना संविधान में उल्लेखित 'सेक्यूलरिज्म'(पंथ निरपेक्षता-धर्मनिरपेक्षता) के सिद्धांत का उल्लंघन है। उल्लेखनीय है कि भारत के संविधान के अनुसार सरकारें किसी एक मजहब को आगे बढ़ाने के लिए धार्मिक सहायता नहीं दे सकतीं। मदरसों में मुस्लिम मजहबी शिक्षा दी जाती है।

न्यायालय ने याचिकाकर्ता के तर्क को मान्य करते हुए 'मदरसा अधिनियम की योजना और उद्देश्य को केवल इस्लाम मजहब की शिक्षा का निर्देश और दर्शन को बढ़ावा देने' वाला बताया है। यह मदरसा अधिनियम समाजवादी पार्टी (सपा) की सरकार द्वारा पारित किया गया था। न्यायालय ने सरकार को निर्देश दिया कि मदरसे में पढ़ने वाले बच्चों को बुनियादी शिक्षा व्यवस्था (सामान्य सरकारी विद्यालयों) में समायोजित किया जाए।

मदरसों की जांच के लिए यूपी सरकार ने अक्टूबर 2023 में एक एसआईटी का गठन किया था जो मदरसों को प्राप्त होने वाले विदेशी धन की जांच कर रही है।

यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय ने मदरसों के संगठन द्वारा की गई अपील पर उच्च न्यायालय के आदेश का क्रियान्वयन बीती 5 अप्रेल को रोक दिया है, अब इसका निर्णय सर्वोच्च न्यायालय स्तर पर होगा।

रुद्रमा देवी

महारानी रुद्रमा देवी का जन्म 1262 ई. में हुआ था। वह दक्षिण भारत में काकतीय (वर्तमान तेलंगाना राज्य) वंश के राजा गणपतिदेव की बेटी थी। पिता ने अपनी पुत्री को शासन की समुचित शिक्षा दी। उन्होंने अपने पिता के साथ विजय अभियानों में भाग लेकर अपनी वीरता की छाप छोड़ी थी। पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने काकतीय राजवंश की रक्षा करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी थी। समाज के निचले लोगों को योद्धाओं के रुप में चुना और उनको इसके बदले उन्हें भूमि कर राजस्व के अधिकार प्रदान किए। वीरांगना रुद्रमादेवी ने विरोधियों को हराकर अपनी वीरता साबित की। उन्होंने 20 वर्षों तक काकतीय साम्राज्य का प्रबंधन किया। रुद्रमा देवी ने चालुक्य वंश के वीरभद्र से विवाह किया। आज भी उन्हें एक देवी के रुप में लोग सम्मान प्रदान करते हैं। वीरांगना रुद्रमा देवी के प्रेरणादायी जीवन पर तेलुगू में फिल्म (2015) तथा 100 एपिसोड का एक धारावाहिक भी बना है।

दिवस

अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस : पहली बार यह दिवस 1889 में प्रारंभ भारत में 1923 से प्रारंभ — 01 मई

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस : वर्ष 1991 में यूनेस्को और संयुक्त राष्ट्र के जन सूचना विभाग ने मिलकर इसे मनाने की शुरुआत की। — 03 मई

विश्व रेडक्रॉस दिवस : रेडक्रॉस के संस्थापक और शांति के लिए प्रथम नोबेल विजेता जीन हेनरी ड्यूनेट के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में यह दिवस मनाया जाता है। — 08 मई

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस — 11 मई

अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस — 12 मई

बच्चों के सामने झगड़ने से डिप्रेशन और डायबिटीज का खतरा

ब्रिटेन की ससैक्स यूनिवर्सिटी के एक शोध के अनुसार जिन बच्चों का बचपन माता-पिता के झगड़ों के बीच गुजरता है उनमें एंग्जायटी और डिप्रेशन बढ़ता है तथा युवा अवस्था में मोटापा, डायबिटीज और हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। उनमें नशा करने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है।

दिल्ली की सीनियर कंसल्टेंट पीडियाट्रिक्स डॉ. वंदना केंट के अनुसार वे जिद्दी हो सकते हैं, झूठ बोलने और चोरी करने लगते हैं। ऐसे में जरुरी है माता-पिता का व्यवहार बेहद संयमित व संतुलित हो।

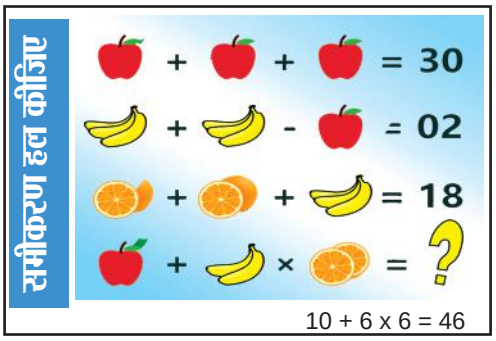

10 + 6 x 6 = 46

कुकिंग टिप्स

तोरई की सब्जी को ज्यादा स्वादयुक्त बनाने के लिए सब्जी बनाते समय थोड़ा सा दूध डाल दें।

घरेलू नुस्खा

छोटा सा हींग का टुकड़ा लेकर उसे पानी के साथ अच्छे से घिस लें। अब इस मिश्रण को बच्चे की नाभि पर लगाएं। इससे पेट की गैस व दर्द में राहत मिलता है।

गीता- दर्शन

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।।
(1/40)

कुल के नाश से सनातन कुल-धर्म नष्ट हो जाते हैं, धर्म के नाश हो जाने पर सम्पूर्ण कुल में बहुत पाप फैल जाता है।

आओ संस्कृत सीखें-34

- प्रायः वैसा नहीं होता। — प्रायः तथा न स्यात्।
- कोई बात नहीं,कल दीजिए। — चिन्ता मास्तु,श्वः ददातु

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. राजस्थान में जवाई बांध योजना से सिंचित जिले कौन से हैं?
2. राजस्थानी 'तारा भांत की ओढ़नी' का पहनावा किस समाज में प्रचलित है?
3. सबरीमाला अय्यप्पन मंदिर किस राज्य में स्थित है?
4. राजस्थान के किस जिले में राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान स्थित है?
5. गढ़ बीठली के नाम से कौन सा व कहां का दुर्ग जाना जाता है?
6. वीरांगना पन्नाधाय ने किसके लिए अपने पुत्र का बलिदान किया था?
7. खानवा का युद्ध कब लड़ा गया था?
8. राजस्थान का रामसागर वन्य जीव अभयारण्य किस जिले में स्थित है?
9. 'दशकुमारचरितम्' पुस्तक के लेखक का नाम बताइए?
10. 'प्रार्थना समाज' के संस्थापक मूल रूप से किसे माना जाता है?

उत्तर इसी अंक में...

बोधकथा

व्यक्तित्व की पहचान

एक बार राजा जंगल में अपने साथियों से बिछुड़ गया। एक-दूसरे को खोजते हुए सबसे पहले सैनिक को एक कुटिया दिखाई दी। उसमें एक अंधा वृद्ध बैठा था। सैनिक ने रौब झाड़ते हुए कहा-''क्यों बे अंधे! इधर से किसी को गुजरते हुए देखा क्या?'' अंधा व्यक्ति बोला-''नहीं सिपाही जी।'' थोड़ी देर बाद वहाँ सेनापति आये, सेनापति ने घोड़े पर ही बैठे-बैठे पूछा-''क्यों जी? इधर से कोई गुजरा है क्या?'' अंधा व्यक्ति बोला-''सेनापति जी! आपका सिपाही यहाँ से गुजरा है।'' फिर मंत्री आया वह घोड़े से नीचे उतरा, पूछा ''बाबा! यहाँ से कोई गया है क्या?'' वृद्ध व्यक्ति बोला-''मंत्री जी! थोड़ी देर पहले आपके सिपाही और सेनापति यहां से गये हैं।'' अंत में राजा आया। राजा घोड़े से उतरा हाथ जोड़कर कहा-''सूरदास जी! प्रणाम, मैं जंगल में भटक गया हूँ, इधर से कोई गुजरा तो नहीं?'' वृद्ध बोला-'हाँ महाराज! सबसे पहले आप का सिपाही, फिर सेनापति, उसके बाद मंत्री और अब आप आये हैं।'' राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अंधा व्यक्ति यह सब कैसे बता रहा है! पूछने पर वह बोला-''आदमी को सुनकर उसके व्यवहार को पहचाना जा सकता है। पहला आया, उसने रौब झाड़ा, समझ आ गया, सिपाही है। दूसरे में अधिकार का अहम था। मैंने समझ लिया कि सेनापति ही होगा। फिर मंत्री ने अपेक्षाकृत विनम्रता तो दिखाई फिर भी मंत्री होने का अहंकार साथ था। राजा जी आपकी विनम्रता देखकर मैं समझ गया कि ऐसा सम्बोधन कोई साधारण व्यक्ति नहीं दे सकता।''

तात्पर्य है कि वचनों से व्यक्ति की पहचान होती है। हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में हमारे वचनों की बहुत बड़ी भूमिका है, इसलिए हमें मृदुभाषी बनना चाहिए।

वर्ग पहेली

वर्गों में प्राचीन 10 विश्वविद्यालयों के नाम दिए हुए हैं। उन्हें खोजिए व अपनी बुद्धि का परीक्षण कीजिए

त	क्ष	शि	ला	थि	मि	जा
सा	रा	शी	शि	उ	ज्जै	न
र	का	की	म	पु	कां	च
ना	लं	दा	क्र	न	ची	ध्या
थ	श्री	रा	वि	प	क्ष	यो
व	ल्ल	भी	पु	र	द्वा	अ

उत्तर: तक्षशिला, काशी, अयोध्या, सारनाथ, नालंदा, विक्रमशिला, मिथिला, उज्जैन, वल्लभीपुर, कांची

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल प्रश्नोत्तरी - 53

बाल मित्रों, 1 मार्च का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **5 मई, 2024**

1. स्वाधीनता के बाद समान नागरिक संहिता लागू करने वाला पहला राज्य कौन सा है?
(क) उत्तराखण्ड (ख) उत्तर प्रदेश (ग) दिल्ली (घ) मध्य प्रदेश
2. किस राज्य में स्वतंत्रता से पूर्व समान नागरिक संहिता लागू है?
(क) कर्नाटक (ख) गोआ (ग) हैदराबाद (घ)महाराष्ट्र
3. असम राज्य के वर्तमान मुख्यमंत्री का नाम बताइए।
(क)हेमंत शर्मा (ख) हेमंत सहाय (ग) हेमंत कुलश्रेष्ठ (घ) हिमंत बिस्व सरमा
4. स्वामी गोविन्ददेव गिरी रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के किस पद पर हैं?
(क) अध्यक्ष (ख) कोषाध्यक्ष (ग) सचिव (घ) महासचिव
5. विश्व हिन्दू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष कौन हैं?
(क) आलोक कुमार (ख)प्रणय कुमार (ग) आलोक शर्मा (घ) आलोक त्रिपाठी
6. वर्ष 2024 में सूर्य नमस्कार का वर्ल्ड रिकॉर्ड किस प्रदेश में बना है ?
(क) उत्तर प्रदेश (ख) राजस्थान (ग) गुजरात (घ) मध्य प्रदेश
7. महाभारत कालीन लाक्षागृह किस स्थान पर बताया जाता है?
(क) बागपत (ख) पानीपत (ग) सोनीपत (घ) बाघपत
8. हल्द्वानी हिंसा का मुख्य आरोपी कौन है?
(क) अब्दुल मलिक (ख) अब्दुल कासिम (ग) अब्दुल फजल (घ) अब्दुल रहमान
9. चित्र भारती का 5वां फिल्मोत्सव कहां आयोजित किया गया?
(क) गुजरात (ख) हरियाणा (ग) दिल्ली (घ) मणिपुर
10. विश्व जल संरक्षण दिवस किस दिन मनाया जाता है?
(क) 22 मार्च (ख) 21 मार्च (ग) 20 मार्च (घ) 30 मार्च

रास्ता खोजो

मधुमक्खी को सही रास्ते से छत्ते तक पहुंचाएं

बाल प्रश्नोत्तरी-51 के परिणाम

अशलेष तेजस प्रियल गर्वित अंजन

1. अशलेष जांगिड़, जयपुर 1.(क)
2. तेजस गोयल, दुर्गा नगर, भरतपुर 2.(क)
3. प्रियल अग्रवाल, गोपालपुरा, जयपुर 3.(ख)
4. गर्वित नेहरिया,पाठों की मगरी, उदयपुर 4.(ग)
5. अंजन दास, गेंता रोड,इटावा, कोटा 5.(ग)
6. आर्यन गुप्ता, जयपुर 6.(ख)
7. नमन सिंह, भगवतगढ़, सवाईमाधोपुर 7(ख)
8. अनिल राठौड़, बिलाड़ा, जोधपुर 8(क)
9. गरिता अरोड़ा, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर 9(ग)
10. मारुति पारीक, किशनगढ़,अजमेर 10.(क)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 53)

(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी 10

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

पाक्षिक
पाथेय कण
(16-30 अप्रैल,2024)
(10 अप्रैल को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

1 से 15 मई, 2024 (वैशाख कृ.8 से शु.8 तक)

जन्म दिवस

वैशाख कृ. 10 (3 मई) – मुनि सुव्रतनाथ जयंती (20वें तीर्थंकर)
वैशाख कृ.11 (4 मई) – वल्लभाचार्य जयंती
वैशाख कृ.12 (5 मई) – सैन महाराज जयंती
7 मई (1861) – रवीन्द्रनाथ ठाकुर जयंती
वैशाख शु.1 (9 मई) – श्रीकुन्थुनाथ जयंती (17वें तीर्थंकर)
– गुरु अंगददेव जयंती (प्रा.मत)
वैशाख शु.3 (10 मई) – परशुराम जयंती, संत बसवेश्वर जयंती
वैशाख शु.5 (12 मई) – आद्य शंकराचार्य व भक्त सूरदास जयंती
वैशाख शु.6 (13 मई) – रामानुजाचार्य जयंती
15 मई (1907) – क्रांतिकारी सुखदेव जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

7 मई (1924) – अल्लूरी सीताराम राजू का बलिदान
8 मई (1899) – वासुदेव हरि चाफेकर का बलिदान
8 मई (1915) – मास्टर अमीरचंद, भाई बालमुकुन्द तथा अवधबिहारी का बलिदान
10 मई(1899) – महादेव रानाडे का बलिदान
12 मई (1899) – बालकृष्ण चाफेकर का बलिदान
16 मई(1665) – मुरारबाजी देशपांडे की वीरगति

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

10 मई (1857) – प्रथम स्वतंत्रता संग्राम प्रारंभ
11 मई (1951) – सोमनाथ मंदिर की पुनर्प्रतिष्ठा
13 मई (1998) – भारत परमाणु-शक्ति संपन्न राष्ट्र बना
वैशाख शु.7 (14 मई) – विजय नगर साम्राज्य स्थापना दिवस

सांस्कृतिक पर्व/ त्योहार

1 मई – बूढ़ा बास्योड़ा
10 मई – अक्षय तृतीया

राष्ट्र हित में वोट कर ...

■ **कुणाल बरड़िया**

आलस निद्रा त्याग कर काम सारे छोड़ कर,
भूख प्यास न याद कर राष्ट्र हित में वोट कर।
निज स्वार्थ छोड़कर, वोटों की ऐसी बहार कर,
विधर्मी ठगबंधन पर, भरपूर तू वार कर।।

कश्मीर से दक्षिण तक भगवा ध्वज लहराकर,
और पूरब से पश्चिम तक, राम राज साकार कर।
एक देश एक विधान एक प्रधान की अब बात कर
विधर्मियों के जाल पर, भरपूर तू वार कर।।

एक होते विरोधियों के, भाव को तू समझ कर,
कट्टरपंथ के दाँव पर अलगाववाद के भाव पर।
देश तोड़ने वाले हाथों पर, जोरदार प्रतिकार कर,
विधर्मियों के जाल पर, भरपूर तू वार कर।।

टपलू, टीकू, चंदन पर, उदयपुर के कन्हैया पर,
पालघर के साधू पर, फिर से आज विचार कर।
हत्या को इनकी याद कर, जोरदार प्रतिकार कर,
आतंक की हर रूह पर, भरपूर तू वार कर।।

मंदिरों के खण्डहरों पर, रक्तरंजित शिखरों पर,
अपमानित पुरखों पर, यादों में जीवित चीखों पर।
जनेऊ के अपमान पर, अब और न इंतजार कर,
मतांतरण के घावों पर, भरपूर तू वार कर।।

आतंकी बिरयानी पर, उलझी न्याय प्रणाली पर,
तुष्टीकरण के खाल पर, सेक्युलरवाद के नाम पर।
नशे में घिरे भविष्य पर, भ्रष्टाचार के तंत्र पर,
घटिया कानून के जाल पर, भरपूर तू वार कर।।

आलस निद्रा त्याग कर, काम सारे छोड़कर,
भूख प्यास न याद कर, राष्ट्र हित में वोट कर।

– आर्किटेक्ट, मालवीय नगर, जयपुर

पंचांग- वैशाख (कृष्ण पक्ष) (24 अप्रैल से 8 मई, 2024 तक)

संकष्ट चतुर्थी–27 अप्रैल, **शीतलाष्टमी (बूढ़ा बास्योड़ा)**–1 मई, **पंचक प्रारंभ**–2 मई (दोपहर 2.33 बजे) **वरुथिनी एकादशी व्रत**–4 मई, **प्रदोष व्रत** –5 मई, **पितृकार्य अमावस्या** –7 मई, **देवकार्य अमावस्या** –8 मई, **पंचक समाप्त**–6 मई (सायं 5: 43 बजे)

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 24–25 अप्रैल को **तुला** राशि में, 26–27 अप्रैल नीच की राशि **वृश्चिक** में, 28 से 30 अप्रैल को धनु राशि में, 1–2 मई को मकर राशि में, 3–4 मई को कुंभ राशि में, 5–6 मई को मीन राशि में तथा 7–8 मई को मेष राशि में गोचर करेंगे।

वैशाख कृष्ण पक्ष में **शनि** यथावत कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। **गुरु** 1 मई को दोपहर 1:02बजे मेष से वृष राशि में प्रवेश करेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** व **मंगल** क्रमशः यथावत मेष व मीन राशि में स्थित रहेंगे। **शुक्र** 24 अप्रैल को रात 11:58 बजे मीन से मेष राशि में प्रवेश करेंगे। **वक्री बुध** यथावत मीन राशि में रहते हुए 25 अप्रैल को सायं 6:25 बजे मार्गी होंगे

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 अप्रैल, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,
_____
_____
_____